ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 अंक- 11 सितम्बर -I (पाक्षिक) माउण्ट आबू Rs. 8.00

नई दिल्ली। भारत के महामहिम राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को रक्षासूत्रा बांधने के पश्चात् राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन उनका अभिवादन करते हुए। श्रीमति कोविंद को रक्षासूत्रा बांधते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी। साथ हैं ब्र.कु. शुभकरण, ब्र.कु. सपना व ब्र.कु. रमा।

दिल्ली। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। साथ हैं ब्र.कु. विजय बहन, ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. रघु तथा ब्र.कु. कमला।

जनभावनाओं का सम्मान करे प्रशासक

ज्ञानसरोवर। प्रशासकों को जन भावनाओं को किसी भी हालत में नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए। जनता की समस्याओं को गहराई से समझकर उनका नियमानुसार समय पर निराकरण करने वाले कुशल प्रशासक ही सच्चे जनहितैषी हैं। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में स्वायत्त शासन एवं शहरी विकास मंत्री श्रीचंद कृपलाने ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि यहां कुछ भी कहना सूर्य को रौशनी दिखाने के समान है। यहाँ संस्थान की व्यवस्था प्रणाली सीखने जैसी है। हमारे कर्त्तव्य से सबको सुख मिले। कहा जाता है जैसा हम करेंगे-वैसा ही हम पाएंगे।

प्रभाग की अध्यक्षा रजयोगिनी आशा दीदी ने कहा कि प्रशासक जीवित लोगों से सम्बद्ध हैं। उनका हर फैसला मानवता से जुड़ा होता है। मूल्यों के साथ ही उनको अपने फैसले लेने होते हैं। तभी उनके फैसले कारगर होते हैं। तो निष्पक्ष रूप से समस्याओं का निराकरण करने के लिए राजयोग मेडिटेशन बहुत उपयोगी है, जिसे हमें अपने जीवन में स्थान देना चाहिए।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सचिव अनिल स्वरूप ने कहा कि जीवन में किसी भी सूरत में निराश नहीं होना चाहिए। राजयोग के अभ्यास से आशावादी प्रवृत्ति विकसित होती है। खुद को जानने का यहां प्रयत्न करें। खुद को जानेंगे तो आप सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार करेंगे।

संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय ने कहा कि प्रशासन को बेहतर तरीके से चलाने के लिए प्रशासन में आध्यात्मिक, नैतिक व वैश्विक मूल्यों का समावेश आवश्यक है।

प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगिनी अवधेश बहन ने कहा कि आज गीता का भगवान् आपको स्वर्णिम प्रशासन की कला बता रहे हैं। वह कला है राजयोग का अभ्यास। इस कला को जानकर आप अपना प्रशासन उत्तम रीति से कर पाएंगे।

प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. हरीश ने सभी प्रतिनिधियों का आभार किया तथा संगठन द्वारा की जा रही सेवाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी देते हुए स्व-प्रशासन को प्राथमिकता देने पर बल दिया।

जयपुर क्षेत्रीय संयोजिका ब्रह्माकुमारी पूनम ने राजयोग का अभ्यास कराया। दिल्ली क्षेत्रीय संयोजिक ब्र.कु. उर्मिल ने भी कुशल प्रशासक के मंत्र बताए तथा कार्यक्रम का कुशल संचालन किया।

ब्र.कु. आशा दीदी के साथ दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मंत्री श्रीचंद कृपलाने, ब्र.कु. मृत्युंजय, अनिल स्वरूप, ब्र.कु. अवधेश बहन, ब्र.कु. हरीश, ब्र.कु. भरत, ब्र.कु. उर्मिल, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. रीना तथा अन्य।

धर्म और कर्म को बनायें जीवन का अभिन्न अंग

ज्ञानसरोवर। धर्म-कर्म जीवन के अभिन्न अंग हैं। ब्रह्माकुमारी संगठन स्वयं के जीवन की ज्योति प्रकाशित करने के साथ विश्व स्तर पर जनहित कार्यों को मूर्तरूप देने में समर्थ है। उक्त विचार धार्मिक सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित 'परमात्म ज्ञान द्वारा सुख व शांति' विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन में वृन्दावन गीता आश्रम के स्वामी डॉ. अमरीश चेतन ब्रह्मचारी ने व्यक्त किये।

पटियाला से आए श्रीश्री 108आचार्य अरविंद मुनि ने कहा कि धर्मग्रंथ मानव को सत्य व अहिंसा की शिक्षा देते हैं, लेकिन उन शिक्षाओं को मन की भूमि पर अंकुरित करने के लिए शिव परमात्मा से संबंध जोड़ना ज़रूरी है।

ज्ञानसरोवर निदेशिका राजयोगिनी डॉ. निर्मला ने कहा कि अविनाशी सुख, शान्ति के लिए अविनाशी सत्ता अर्थात् आत्मा व परमात्मा की सत्यता को जानना बहुत ज़रूरी है।

भरतपुर सिद्धपीठ के पीठाधीश्वर डॉ. कौशल किशोर महाराज ने कहा कि मानवीय चरित्र निर्माण करना सबसे पुण्य का कार्य है। उसके लिए राजयोग का नियमित अभ्यास बेहतर उपाय है।

औरंगाबाद प्रज्ञा प्रसार धम्म संस्कार केंद्र अध्यक्ष भिक्खू विशूदानंद बोधी महाथेरा ने कहा कि आधुनिकता के प्रभाव से डगमगाती अध्यात्मिकता को संबल देने का अद्भुत उदाहरण ब्रह्माकुमारी संगठन की ओर से विश्व में शान्ति स्थापन करने का कार्य सबके समक्ष है। दैहिक धर्मों से उपर उठकर अपने निजी स्वधर्म को पहचानकर एकजुट हो जाएं।

राष्ट्रीय सिक्ख संघ सचिव रघुवीर सिंह ने कहा कि विश्व में फैले अनेक धर्मों को एक मंच पर एकत्रित कर परिवार की तरह जोड़ने का ब्रह्माकुमारी संगठन ने जो कार्य किया है वह अद्वितीय है।

ब्रह्मकुमारी संगठन के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि स्थाई सुख शांति के लिए स्वयं के अस्तित्व का प्रकाश होना चाहिए।

गुजरात बिलीमोरा से आई ब्रह्मवाहिनी सुश्री हेतल दीदी ने कहा कि शिव परमात्मा से योग लगाने से ही आत्मा पावन बनती है।

स्वामी शांतात्मानंद जी ने कहा कि अभ्यास व वैराग्य से हम आत्मा के मूल गुणों के साथ वास्तविक जीवन जी सकते हैं।

आचार्य देवमुरारी बापू ने कहा कि इस ज्ञान सरोवर में यही सिखाया जाता है कि सत्य ही बोलो। यहाँ मैंने त्याग, तपस्या, प्रेम को देखा, यहाँ जो भी आयेगा वह इस स्थान व यहाँ की प्राप्तियों को कभी भूल नहीं पायेगा, यहाँ पर आकर प्रत्यक्ष यह महसूस होता है कि परमात्मा शिव की असीम कृपा यहाँ बरस रही है।

महामण्डलेश्वर डॉ. रामकृष्ण दास महाराज लहवितकर जी ने कहा कि यह विश्वविद्यालय सम्पूर्ण विश्व में एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है जहाँ संस्कारों की शिक्षा दी जाती है तथा मानव जीवन को उत्कृष्ट बनाने की सेवा की जाती है।

प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. मनोरमा ने कहा कि ज्ञान एक प्रकाश है जो मन के सभी प्रकार के अंधकार को समाप्त कर जीवन में नई ऊर्जा का संचार करता है।

ब्र.कु. सोमप्रभा ने बताया कि यथार्थ सत्य को जानने से ही शांति मिल सकती है। धार्मिक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. रामनाथ, फरीदाबाद से आए शीतल महाराज, राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु.कुन्ती आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय धार्मिक सम्मेलन में शरीक हुए सभी प्रान्तों के धर्म प्रतिनिधि

विभिन्न धर्म प्रतिनिधियों के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. डॉ. निर्मला, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. रामनाथ, ब्र.कु. मनोरमा तथा अन्य।